‘मन्दिर में रहो-३’

का परिचय

स्वामी शान्तानन्द द्वारा लिखित

‘मन्दिर में रहो’ सत्संग जो वर्ष २०२० में मार्च से लेकर अगस्त माह के बीच, सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित हुए, वे गुरुमाई चिद्विलासानन्द की ओर से सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् के लिए प्रसाद हैं। ये सत्संग वैश्विक महामारी के दौरान आयोजित हुए और मैंने स्वयं स्पष्टता से यह महसूस किया है कि किस प्रकार इन सत्संगों के माध्यम से व इनमें श्रीगुरुमाई द्वारा प्रदान की गई सिखावनियों के माध्यम से, हमारी श्रीगुरु हमारा मार्गदर्शन कर रही थीं कि इस कठिन समय में अपना मार्ग ढूँढ़ने के लिए हमें जिस आशा, बल और ज्ञान की आवश्यकता हो, उसे हम अपने अन्दर से पाएँ। ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों के लिए गुरुमाई जी का संकल्प था कि *लोगों का फिर से उत्साहवर्धन हो*—और जैसा कि आप सभी जानते हैं, ऐसा ही हुआ। कई लोगों ने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर तथा ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों की प्रबन्ध निदेशक, रोहिणी मेनन को अपने अनुभवों में बताया कि कैसे इन सत्संगों में भाग लेने से समस्त स्तरों पर उनके अस्तित्व का उत्थान हुआ है।

‘मन्दिर में रहो-३’ के पृष्ठों पर दी गई व्याख्याएँ आपको सम्बल प्रदान करेंगी जिससे ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में आपने जो कुछ भी प्राप्त किया और सीखा है, आप उसमें एक क़दम आगे बढ़ सकें। ये व्याख्याएँ सिद्धयोग ध्यान-शिक्षकों व भारत की साहित्यिक व शास्त्रीय परम्पराओं के विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं; ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में आप जिन सिद्धयोग सिखावनियों, अभ्यासों और परम्पराओं से परिचित हुए, ये व्याख्याएँ उन्हें गहनता से समझाती हैं। इन लेखकों ने अपनी व्याख्याओं में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों—शास्त्रीय, दार्शनिक, वैज्ञानिक, भाषाविज्ञान व सांस्कृतिक क्षेत्र—के सन्दर्भों का प्रयोग किया है ताकि इन विषयों को और विद्यार्थी की साधना में इनके महत्त्व को समझाया जा सके।

सिद्धयोग पथ पर अध्ययन—अध्याय—के अन्तर्गत शामिल हैं, श्रीगुरु के शब्दों व शास्त्रों से सीखना और अपने अन्तर के आध्यात्मिक लोक में होने वाले अनुभवों से सीखना—वे अनुभव जो हमें होते हैं और जिन्हें शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता। अध्ययन, वचनबद्धता है यह जानने की कि आप वास्तव में कौन हैं, अपने दिव्य स्वरूप की गहराई को जानने की और यह जानने की कि आपकी आत्मा और आपके संसार के बीच जागरूकता की एक निरन्तरता बनी रहती है जो परम सन्तोष व प्रेम प्रदान करती है। मुझे याद है वह समय जब मैंने स्वयं पहली बार इसे जाना था। विद्वत्ता एवं ज्ञान के आजीवन प्रेमी के रूप में मैंने अध्ययन को सदैव उच्चतम आदर के स्थान पर रखा था और इसे उत्सुकतापूर्वक अपनाया, परन्तु मैंने हमेशा ज्ञान को प्रेम से भिन्न माना। इसलिए आप कल्पना कर सकते हैं कि एक विद्वान के लिए यह जान लेने का अर्थ क्या रहा होगा कि ज्ञान, भक्ति की ओर ले जाता है!

मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप इन व्याख्याओं को पढ़ें, इनका अध्ययन करें एवं अपनी अन्तर्दृष्टियों को जर्नल में लिखकर, इनसे प्राप्त नवीन जागरूकता व समझ को अपनी साधना में लागू करें। आप अपने जीवन व अपनी साधना में जो लागू कर सकते हैं, उसे जानने के उद्देश्य से इस प्रकार पवित्र सिखावनियों का निरीक्षण करना मानो धरती के गर्भ में से स्वर्ण को खोद निकालने के समान है—दिव्य प्रज्ञान रूपी स्वर्ण।

इतना ही नहीं, जब अध्ययन को सच में रुचि लेकर व जिज्ञासा के साथ किया जाता है, तब यही प्रयास आपको प्रेरित करता है कि आप जो सीख रहे हैं उसके अनुरूप जीवन जिएँ। क्या हम अपने पथ के उपदेशों के अनुसार जीने का अनुभव नहीं करना चाहते? आध्यात्मिक साधना आपको यह बताती है कि आत्मज्ञान एक अनुभव के साथ-साथ एक समझ भी है। आप महसूस करने लगते हैं : *मैं जैसे चाहूँ वैसे जी सकता हूँ।* और जब आप श्रीगुरु की सिखावनियों के अनुसार जीने की अपनी ललक को पहचानते हैं तब आप ऐसा करने के लिए—उन सिखावनियों को आत्मसात् करने और उन्हें अपने जीवन में लागू करने के लिए उचित क़दम उठा सकते हैं। फिर, समय के साथ-साथ, आप पाएँगे कि आप जो सोचते हैं, जो महसूस करते हैं, जो बोलते हैं और जो करते हैं, वह उत्तरोत्तर धार्मिक जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति बनता जाता है, एक ऐसा जीवन जिसमें सत्य का पालन होता है और जो सत्य में अवस्थित होता है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।